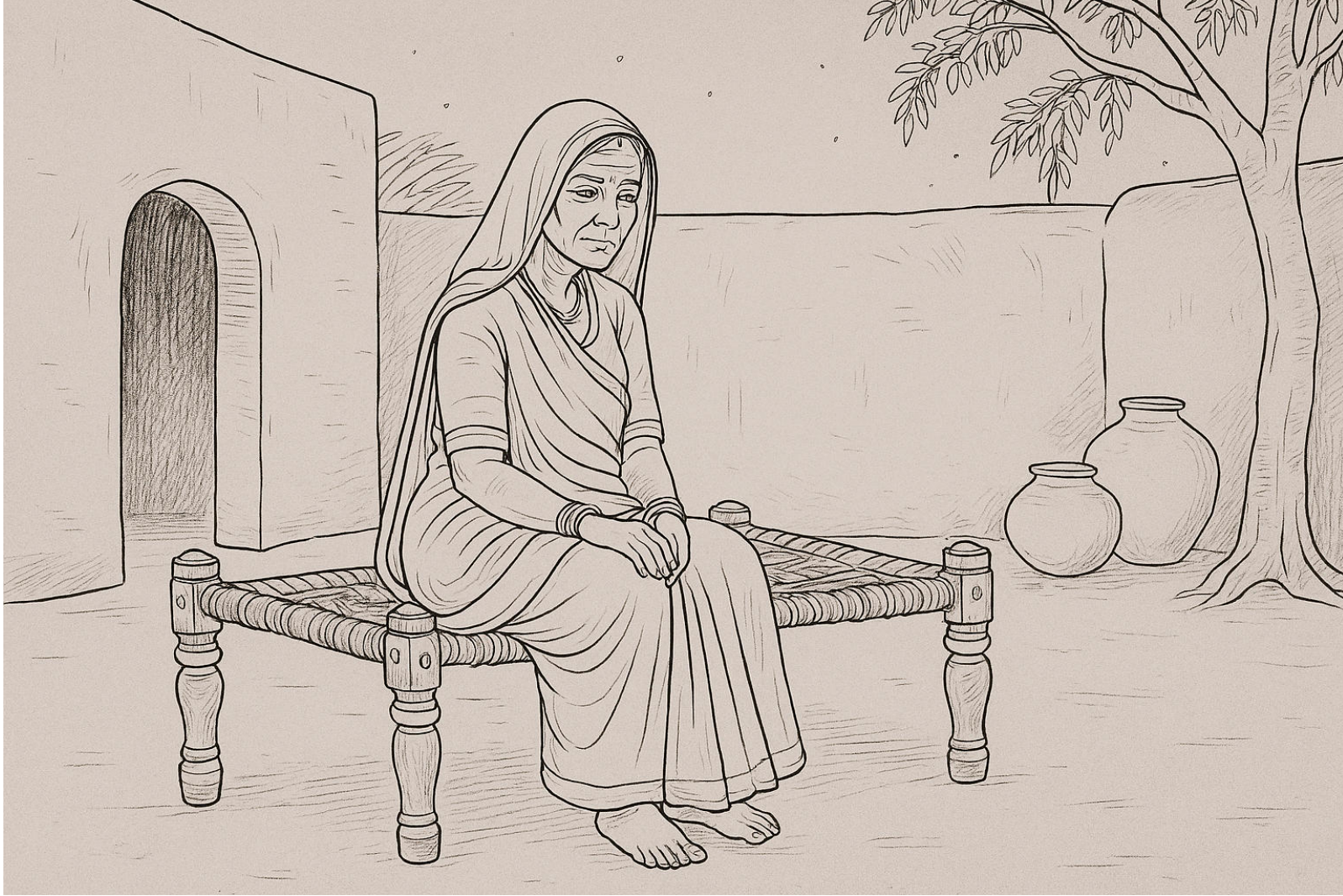


एखुलिया रौणौ



Bangani

एखुलिया रौणौ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-

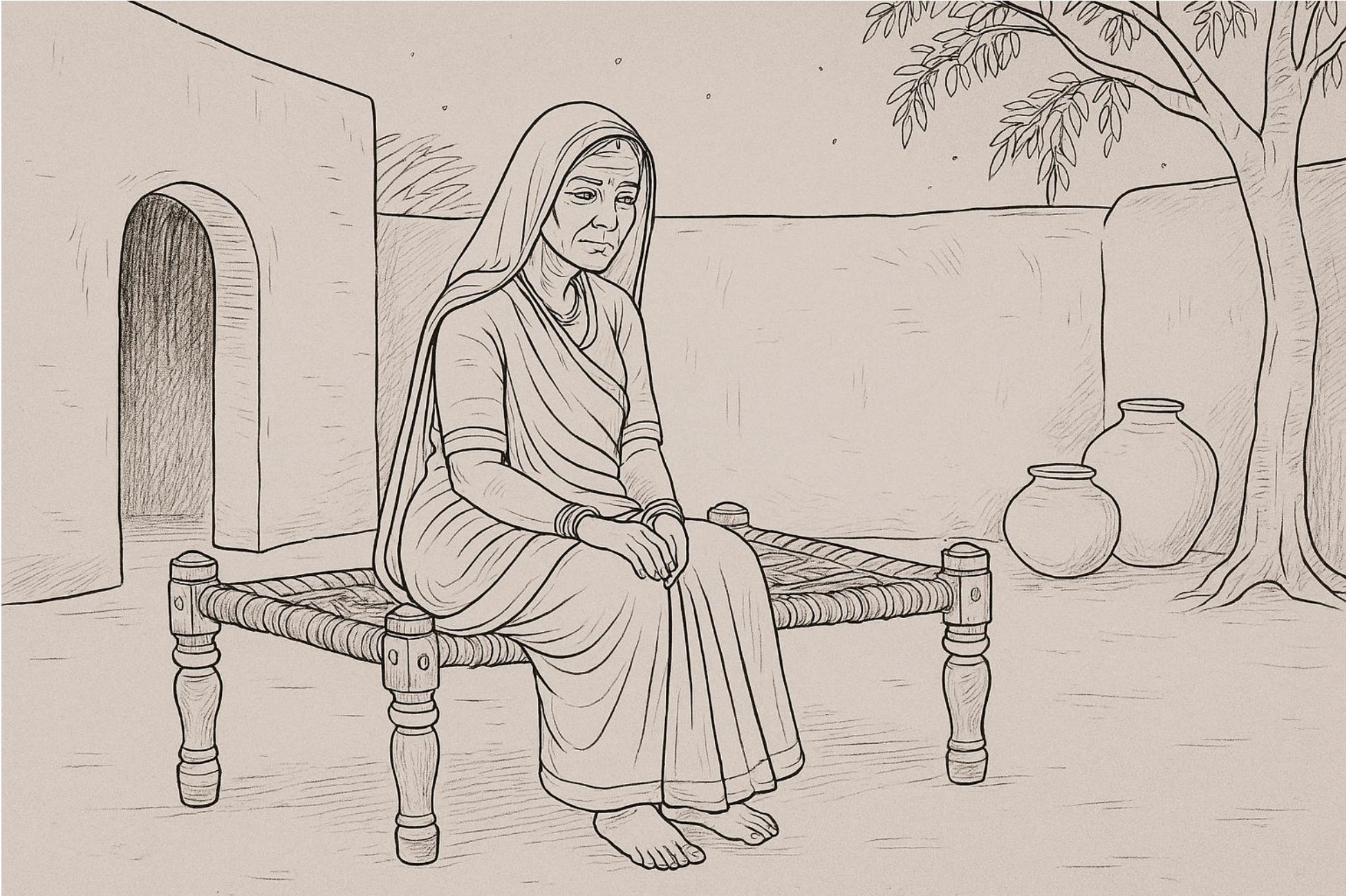
NLCI

बंगाणी मसी समिति समू

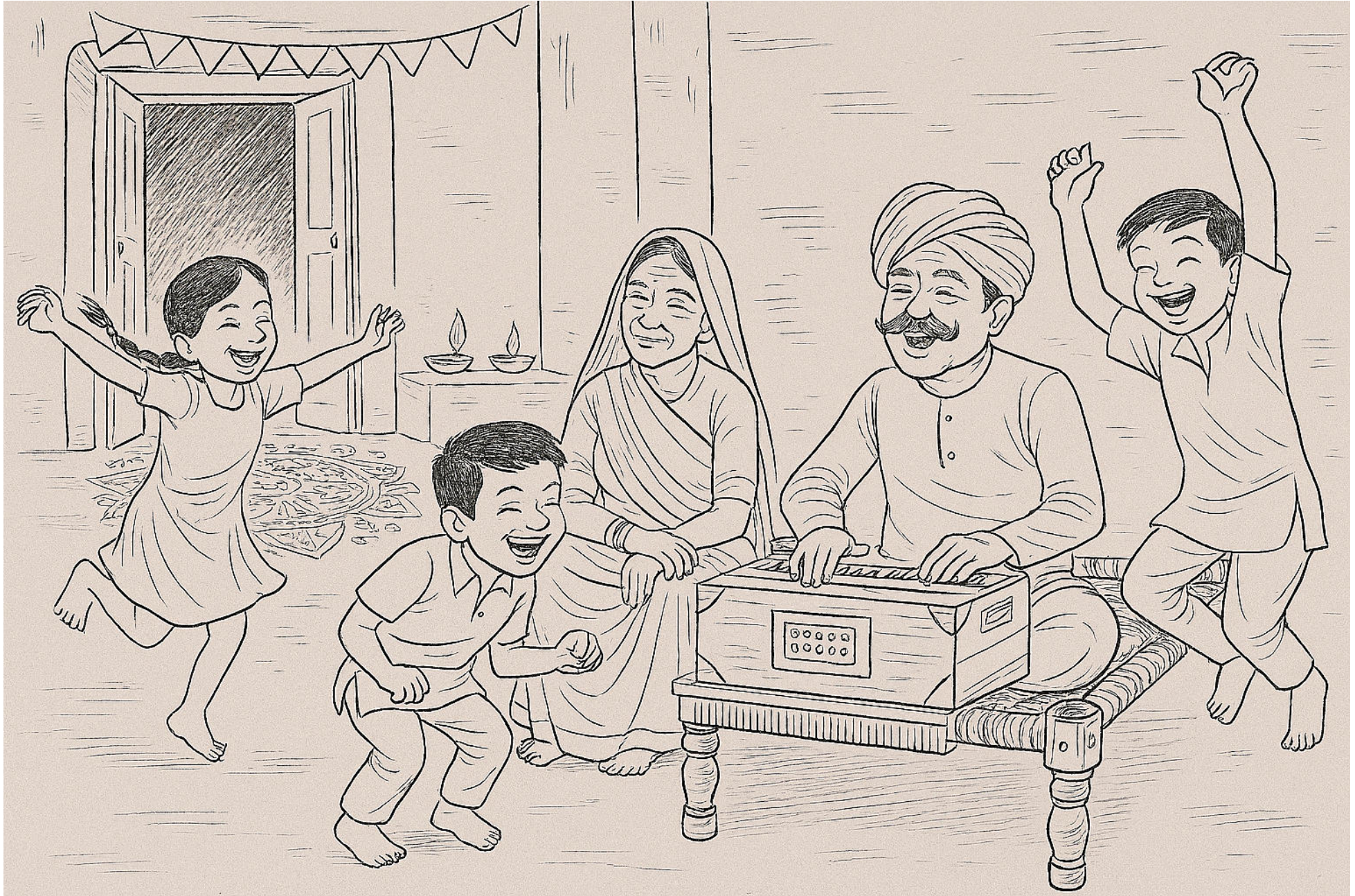
दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

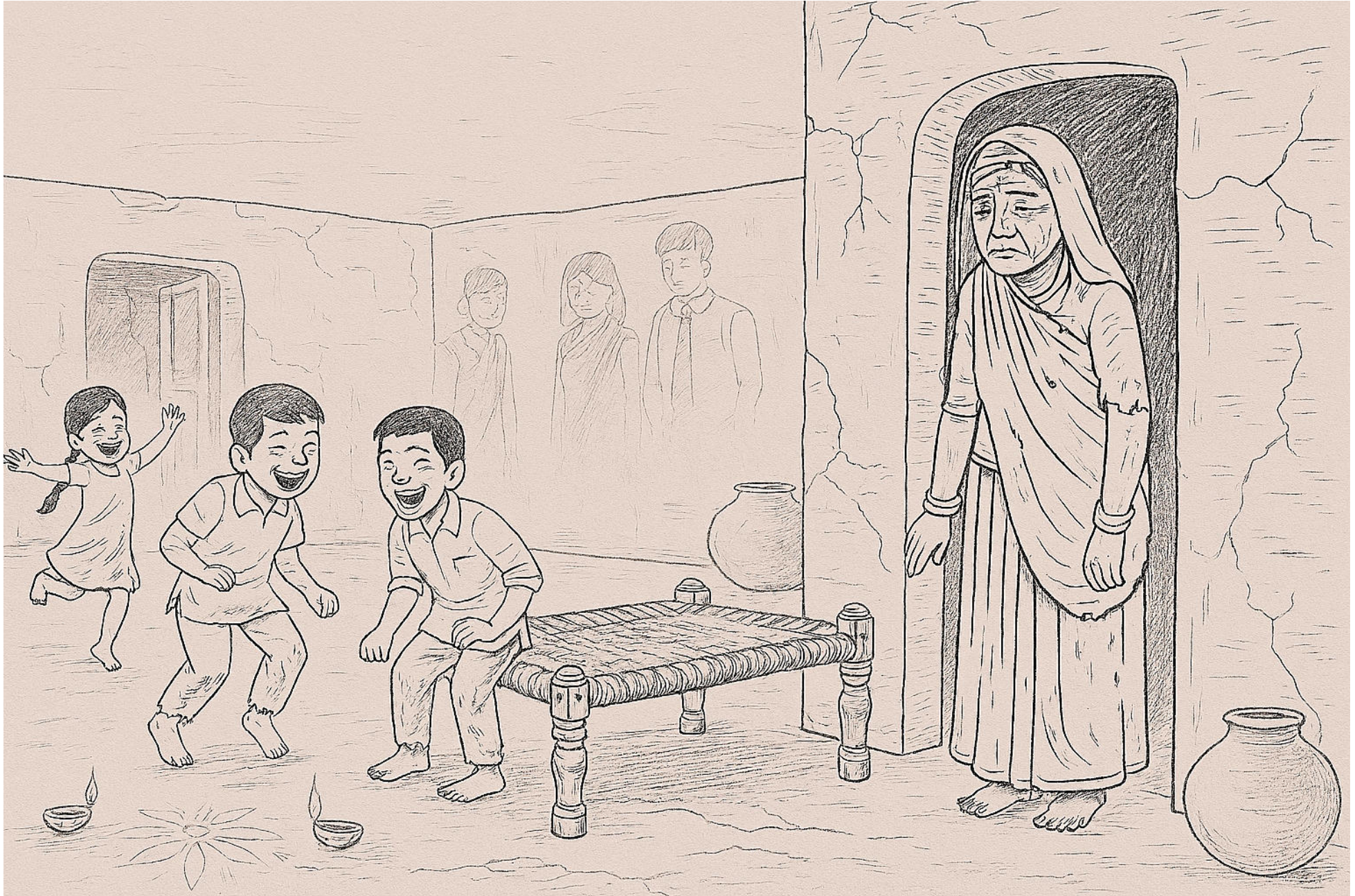
॥धन्यवाद॥



एक गाउँ दि सावित्री रौयै थी, सै एक विदुवा
थी। सै आपड़ौ गौरेदि एखुलियाइ रौयै थी।
बियाळकै सै बाऽलै आँगण दि चारपाई माइं
बोशियौ औगौणिकेरी बुशौउँ याद कौरै थी।



औगौणिकै तिउंरै पौरिबाळ वाळै, बाऽलै
आंगण दि बोशियौ औसैण थै साथी गीत बी
लायैण थै। औजि पेटारै बी खुब खेळैण थै।
औजि सारै जौणै बौड़िया कौइ रौयैण थै।



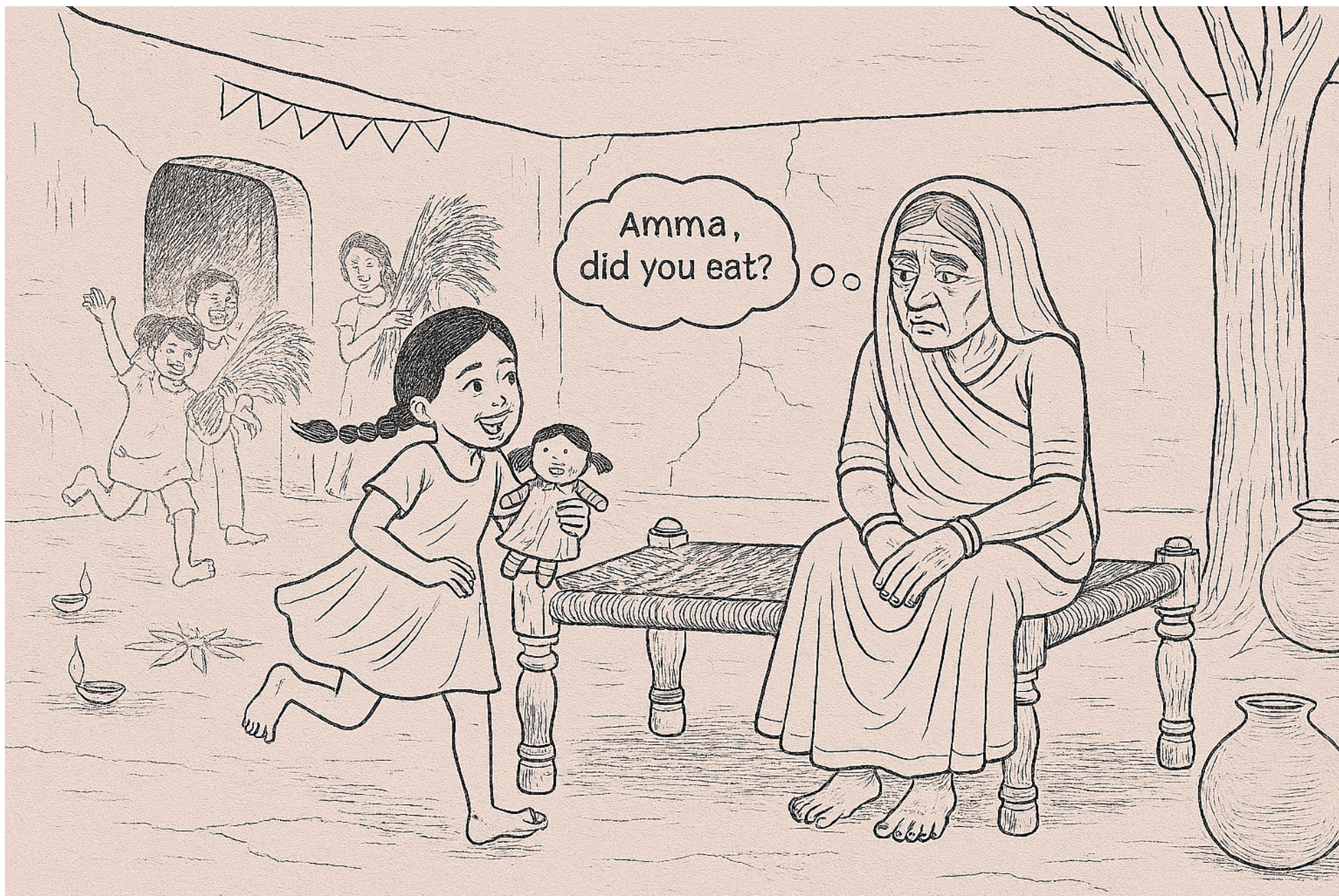
पर ऐबै तिउंरौ गौरैदि कोइ बी ना नौथि थी
केलाकि सै सारै जौणै शैर दि डेइ गोए थै
काम कौरदै। औज़ि तिंरी बुआरियै केत्रा
केत्रा आयैण थै गौरै केलाकि सावित्री गौरकै
एखुलियाइ रौयै थी।



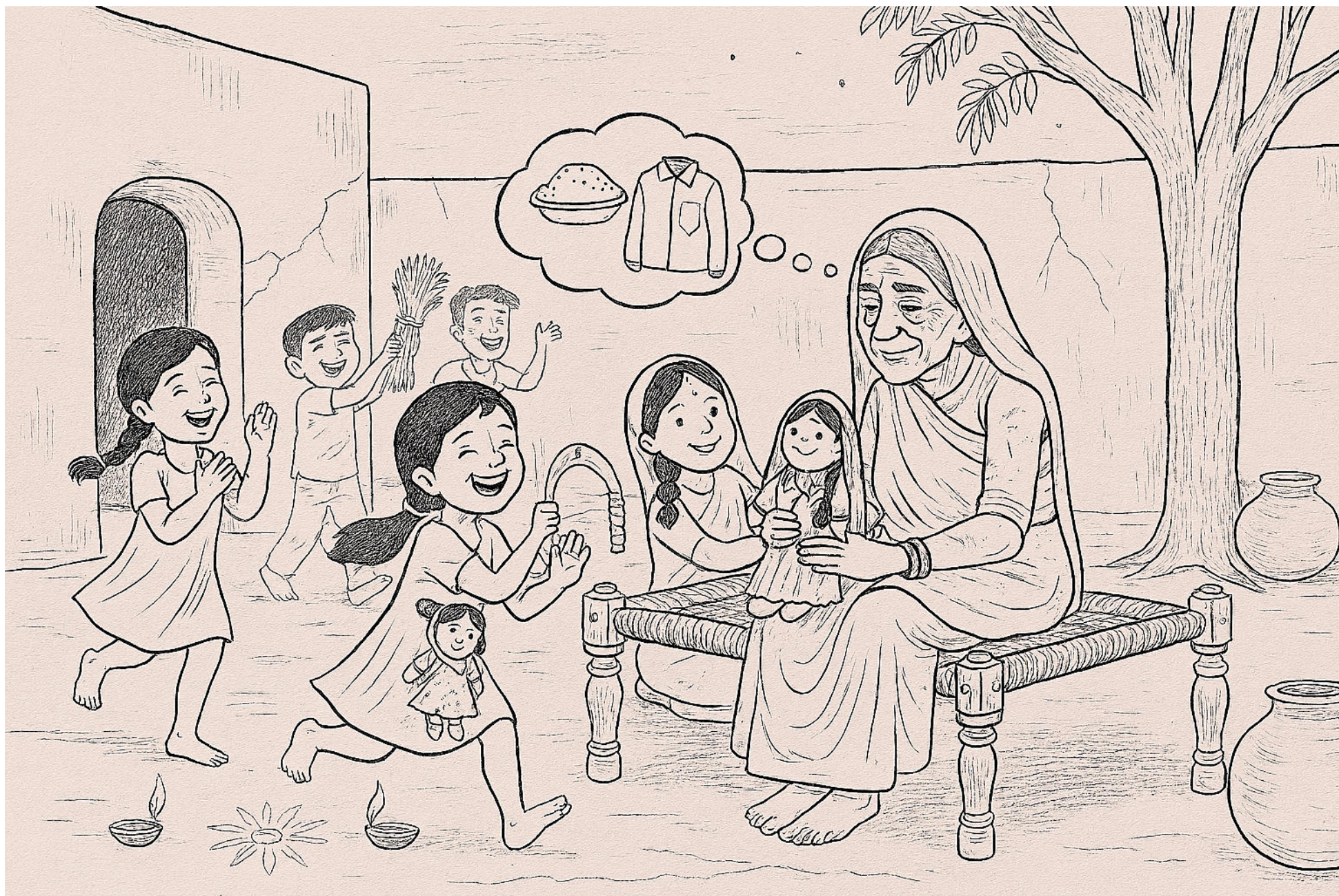
सावित्री कै सारी चिज़ै थी देणियौन्दि तिनकै
केज़ेइ बी चिजे री कौमी ना नौथि थी। पर सै
एखुलिया री बौज़ै कौइ काफी दुखी रौयै थी।



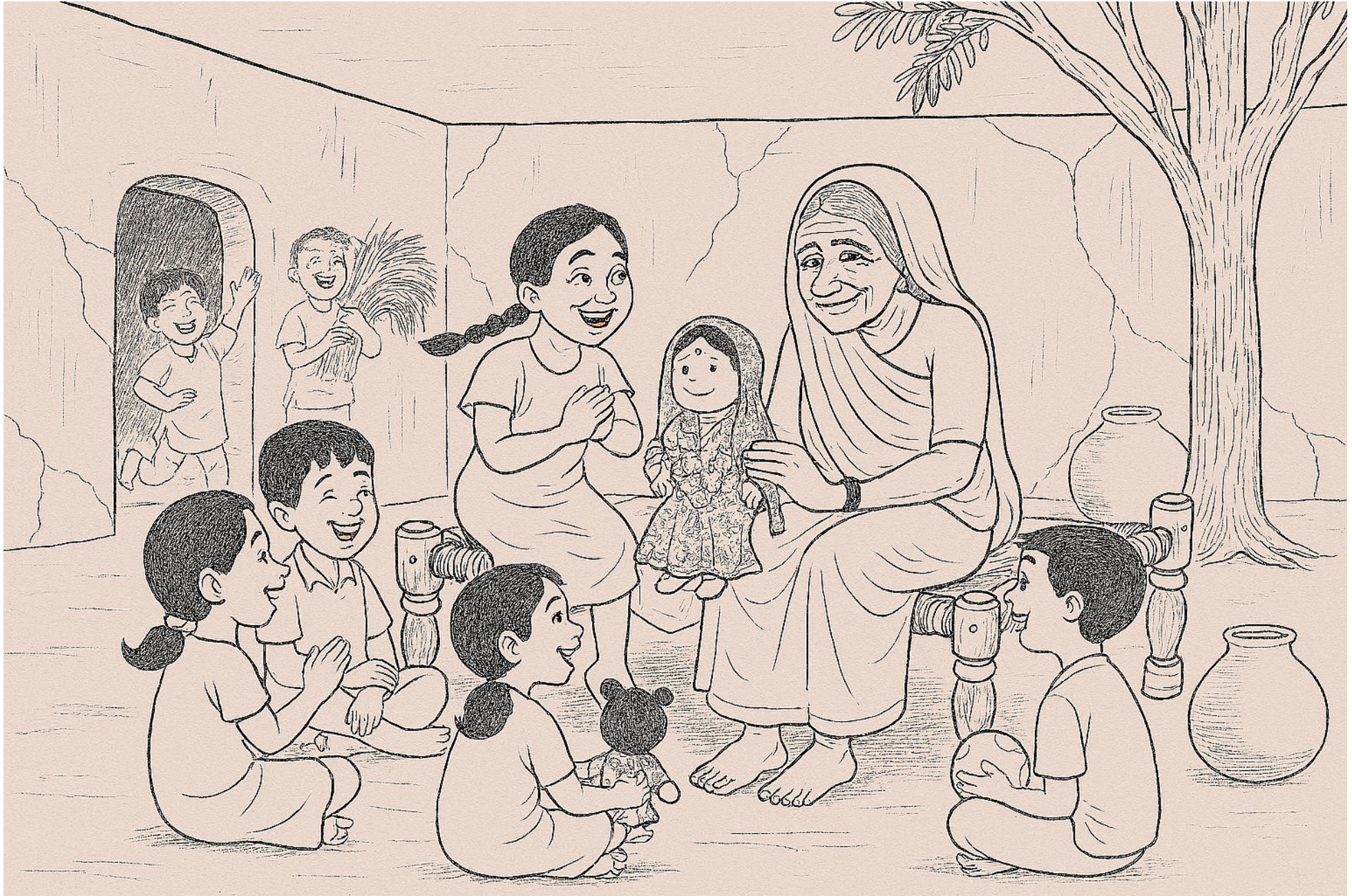
जौ कोई तियारी एशौ बोलैण थै कि तुमु
खाणौ खाइ गोऔ, सै तिउँकै कुछ बी
जौबाब ना दै थी, केलाकि तिरौ एखुलिया
रौणौ बुख कौइ बी ज़ादा बारी लागै थौ।



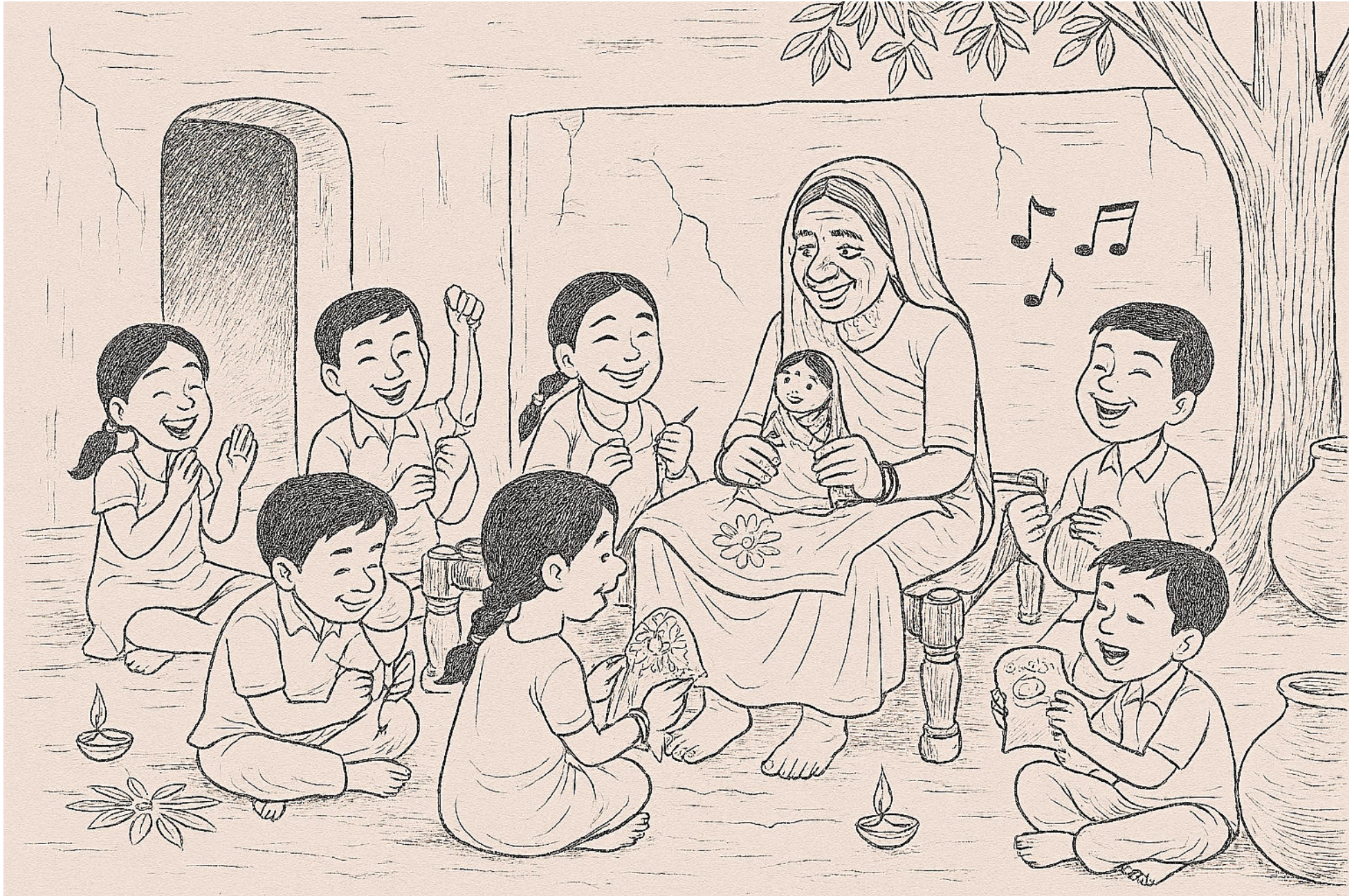
एक दूसर फसल काटणै रौ बौक्ते दि पेटारौ
खेल्दै रौयै थै लागी। तिउँरै पोड़ोसी कौइ एक
गुड़िया दौड़ियौ सावित्री काई आइयौ बोलौ
कि दादी मेरी गुड़िया री शादी तुमै ओरू
आओ।



एशौ शुणियो दादी औस्दि लागी, औज़ि सै
बी पेटारौउं रै साथै खेल्दी लागी, औज़ि
पेटारौउं रै साथै शादी री रसम बी निबान्दी
लागी। सै काफी खुश उई।



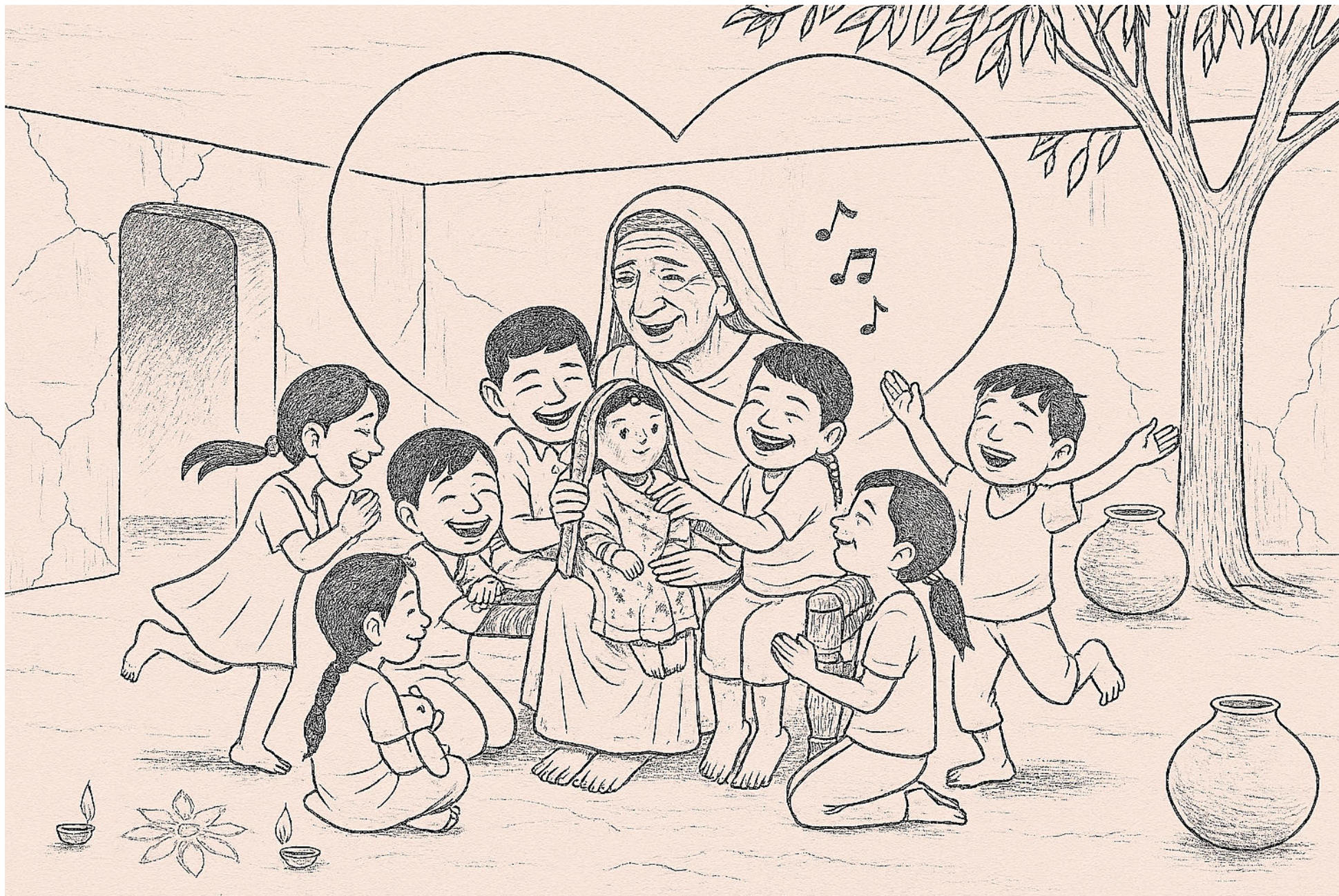
तेत्वासियै सै पेटारै हमेशाइ दादी का आयैण
थै खेल्लै, औज़ि दादी बी तिउँरै साथै खेलै
थी। औज़ि तिउँ बौड़िया बौड़िया बुशै बी
शिका थी।



सावित्रिएइ पेटारौउं कौइ कुछ चित्र औज़ि
लोकगीत बी शिकायै, औज़ि पेटारौउं
दादी कौइ पुराणी रीति-रिवाज़ रै बारे दि
बी शिकौ।



ऐबै आराम आराम कौइ तेस आँगन दि
पेटारौउं री बौजै कौइ औस्पौ, खेलणौ औजि
गौत लाणौ शुरु उवौ । ऐबै सावित्री बी तिउं
पेटारौउं रै साथै खुश रौन्दि लागी गोइ थी ।
पोडोसी बी तिउंरै गौरै काइ री रौनक देखियौ
चकित औयैण थै ।



ऐबै सावित्रिएइ बी एशौ ज़ाणी गोओ थौ कि
पौरिबार खाली खुन रौ रिश्तै कौइ ना औन्दौ
बौल्लिक पियार औज़ि सेवा कौरियौ रिश्तौ
औज़ि बी मज़बुत औयै। गाउँ रै पेटारै तिरै
कौइ-कौनाळै बौणी गोए थै।



सावित्रिएइ सौचाइ ज़ाणी गोइ थी कि पियार
बाँटणै कौइ औयै। खाली चारपाई ऐबै एक
मिलणै जुलणै री एक बौड़िया ज़ागा बौणी
गोइ थी।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....,धन्यवाद,.....

